कोविड महामारी का शिक्षा व्यवस्था पर प्रभाव

*राजकुमारी रजक

कोविड-19 वैश्विक महामारी ने विश्व स्तर पर शिक्षा प्रणाली सहित सभी क्षेत्रों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। भारत ने भी सभी क्षेत्रों में उस चुनौती का सामना किया है। जिससे भारतीय शिक्षा प्रणाली में बहुत बाधा उत्पन्न हुई। लॉकडाउन और सोशल डिस्टेंसिंग ने जहां एक ओर छात्र जीवन को प्रभावित किया, वहीं दूसरी ओर प्रौद्योगिकियों के इस्तेमाल से एक नई शिक्षा प्रणाली की नींव पड़ी। स्कूलों और कॉलेजों के बंद होने से लगभग 32 करोड़ छात्रों को स्कूलों और कॉलेजों में जाने से रोक दिया गया, लेकिन परंपरागत शिक्षा प्रणाली के साथ हमने ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली की शुरुआत होते हुए भी देखा। परिवर्तनशील संसार की परिवर्तनशील परिस्थितियों में शिक्षा का क्षेत्र दुनिया भर में अग्रणी साबित हुआ और डिजिटलीकरण के माध्यम से कोविड-19 के खतरे पर सफलतापूर्वक काबू पा लिया गया। इस पेपर में कोविड-19 महामारी की स्थिति पर काबू पाने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनेस्को और यूनिसेफ जैसी संस्थाओं की गाइडलाइन और सहयोग से भारत सरकार द्वारा उठाए गए उपायों सहित सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर चर्चा की गई है। साथ ही कोविड-19 के बाद भारतीय शिक्षा प्रणाली में हुए आमूल चूल परिवर्तनों तथा डिजिटलीकरण के महत्व तथा सुझावों के क्रियान्वयन के लिए प्रयास किए गए हैं।

प्रस्तावना:-

कोविड-19 महामारी जिसकी शुरुआत चीन के वुहान शहर दिसंबर 2019 में हुई और यह पूरे विश्व में फैला। 11 फरवरी 2020 को इसे कोरोना वायरस का नाम दिया गया और 11 मार्च 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन(WHO) ने कोविड-19 को वैश्विक महामारी घोषित कर दिया, भारत में पहला व्यक्ति जो केरल राज्य से था वुहान शहर की यात्रा के कारण इस महामारी की चपेट में आया और 12 मार्च 2020 को भारत में पहली मौत इस महामारी के कारण हुई।

इस महामारी ने 300.851 मिलियन लोगों को पूरे विश्व में प्रभावित किया। यूनिसेफ की मॉनिटरिंग के अनुसार 23 देशों ने राष्ट्रव्यापी बंदी और 40 देशों ने स्थानीय बंदी की घोषणा की। इस भयानक महामारी ने विश्व की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली को ध्वस्त कर दिया। 190 देशों के 1.5 बिलियन छात्रों ने स्कूल और संस्थानों में जाना छोड़ दिया और लगभग 94% छात्र प्रभावित हुए। (United Nations 2020) उच्च शिक्षा के छात्रों पर इस महामारी के गंभीर परिणाम पड़े। छात्रों का आर्थिक ,सामाजिक ,राजनीतिक ,मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक विकास प्रभावित हुआ। इस हेतु व्याप्त महामारी के दौरान भारत सरकार व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किए गए प्रयासों का संक्षिप्त विवरण तथा प्रभावों को इस शोध पत्र में निम्न बिंदुओं के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

महत्वपूर्ण बिंदु:-

(1) भारत सरकार द्वारा महामारी के दौरान उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रयासों की जानकारी प्रदान करना।

(2) शिक्षा प्रणाली में कोविड-19 के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का मूल्यांकन करने के लिए।

(3) UNICEF, UNESCO ,WHO जैसी संस्थाओं का कोविड-19 के दौरान किए गए प्रयास एवं सहयोग की जानकारी देना।

(4) कोविड-19 के बाद की शिक्षा प्रणाली।

चर्चा:-

वैश्विक महामारी के दौरान WHO(World Health Organisation) UNESCO (United Nations Educational Scientific and Cultural Organisation) UNICEF (United Nations Children's Emergency Funds) जैसी संस्थाओं के सहयोग से इस संकट से उबरने के कई प्रयास किए गए।

" हम एक असामान्य स्थिति का सामना कर रहे हैं क्योंकि एक ही समय में एक ही मुद्दे से बड़ी संख्या में देश प्रभावित हैं ।हमें न केवल इस अभूतपूर्व संकट के तत्काल शैक्षिक परिणामों को संबोधित करने के लिए बल्कि शिक्षा प्रणालियों को दीर्घकालिक लचीलापन बनाने के लिए एक साथ आने की जरूरत है।"

स्टेफनिया जियानिनी

(यूनेस्को के शिक्षा के सहायक महानिदेशक)

उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए (UNESCO IESALC) यूनेस्को आई ई एस एल सी की सिफारिशें:-

(1) केवल और विशेष रूप से राष्ट्रीय स्वास्थ्य अधिकारियों और विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रदान की गई जानकारी और सिफारिश को विश्व विद्यालय समुदाय के बीच प्रसारित करें, अलार्मवाद या झूठी अफवाहों या समाचार के प्रसार से बचें।

(2) विश्वविद्यालय समुदाय को कोविड-19 के बारे में तुरंत और सच्चाई से सूचित करने के लिए नियमित रूप से वेबसाइट और सोशल नेटवर्क का उपयोग करें जिसमें रोकथाम या छूत की स्थिति में अपनाये जाने वाले व्यवहार पर सिफारिशें,साथ ही अनुसंधान में हाल की प्रगति और सक्रिय रूप से नस्लवाद का मुकाबला करना शामिल है।

(3) जिन संस्थानों में चिकित्सा विभाग या सार्वजनिक स्वास्थ्य विद्यालय हैं ,वे कोविड-19 पर ओपन एक्सेस पाठ्यक्रमों के विकास की सुविधा प्रदान करते हैं।

(4) राष्ट्रीय अधिकारियों के निर्देशों और सिफारिशो का अनुपालन करें ।

जैसे:-

* अंतर्राष्ट्रीय विनिमय कार्यक्रमों या विदेश यात्राओं को रद्द या स्थगित करें, कम से कम वे जिनमें छात्रों, प्रोफेसरों और शोधकर्ताओं के कोविड-19 से प्रभावित देशों से प्रवेश या प्रस्थान शामिल है।

* अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक बैठकें और सम्मेलन रद्द करें या स्थगित करें।

* आमने-सामने की शैक्षणिक गतिविधियों को निलंबित करें।

(5) इस संभावना का अनुमान लगाते हुए संस्थागत आकस्मिक योजना तैयार करें कि संस्थान को अपने दरवाजे बंद कर देने चाहिए।

उपर्युक्त सभी निर्देशों का पालन भारत सरकार द्वारा महामारी के दौरान करवाया गया।

कोविड-19 के दौरान के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलू:-

एक और जहां संपन्न परिवारों तथा शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले स्टूडेंट्स डिजिटल शिक्षा से लाभान्वित हुए वहीं दूसरी ओर गरीब और ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले स्टूडेंट्स ने इलेक्ट्रॉनिक गैजेट ,इंटरनेट कनेक्शन और प्रौद्योगिकी का ज्ञान नहीं होने के कारण तथा निर्धनतावश इसका खर्च वहन नहीं कर सकते थे। इसके कारण कई छात्रों ने शिक्षण संस्थानों को छोड़ दिया । छात्रों का झुकाव कभी-कभी ऑनलाइन गेम और सोशल प्लेटफॉर्म की तरफ बढ़ जाता है ।

लंबे समय तक इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के इस्तेमाल के कारण स्टूडेंट्स को कई स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी हुई कुछ क्षणिक तथा कुछ दीर्घकालिक परेशानियों के रूप में उभरी दीर्घकालिक परेशानियों की बात करें तो वर्तमान पीढ़ी का स्टूडेंट इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के बिना नही रह पा रहा। मोबाइल, टीवी,पीसी, लैपटॉप का आदी हो चुका है। छात्रों की किताबों से ज्यादा गैजेट्स पर निर्भरता बढ़ गई है। जिसका प्रभाव उनके मानसिक स्वास्थ्य पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है ।

कोविड-19 के बाद की शिक्षा प्रणाली:-

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी में भी ऑनलाइन शिक्षा ने खरा उतरकर यह साबित कर दिया कि यह शिक्षा प्रतिकूल समय के लिए भी उपयुक्त है इंटरनेट और मोबाइल या कंप्यूटर के माध्यम से सभी बच्चों तक कम समय में शिक्षा को पहुंचाया जा सकता है। शिक्षा के अधिकार और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के लिए आवश्यक है कि छात्रों का ससमय वर्ग की शुरुआत की जाए। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली इन सभी कमियों को दूर करने का एक सशक्त माध्यम है। ऑनलाइन शिक्षा में कई खामियों के बावजूद शिक्षा को सभी वर्गों और समुदाय के बच्चों तक एक साथ पहुंचा जा सकता है। ,"न्यू एजुकेशन पॉलिसी" में डिजिटलीकरण के अंतर्गत टेक्नोलॉजी का फायदा उठाकर आज सीखने- सिखाने की प्रक्रिया में PPT'S, वीडियो प्रेजेंटेशन, ई लर्निंग तरीके ,ऑनलाइन प्रशिक्षण को महत्व दिया जा रहा है । भारत सरकार का मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत उच्च शिक्षा विभाग, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा पर राष्ट्रीय मिशन कार्यक्रम के माध्यम से देश में डिजिटल शिक्षा को प्रोत्साहित कर रहा है।

भारतीय राज्यों की प्रमुख डिजिटल पहलें:-(Dhyeya IAS.com article)

* राज्य सरकार द्वारा की गई कुछ प्रमुख डिजिटल पहलों में राजस्थान में "स्माइल"(social media interface for learning engagement), जम्मू में प्रोजेक्ट होम "क्लासेस", छत्तीसगढ़ में " पढ़ाई तुहार द्वार", दिल्ली में एनसीटी का अभियान " बुनियाद", केरल का शैक्षिक टीवी चैनल "ई-विद्वान पोर्टल" इत्यादि।

* " उन्नयन बिहार पहल" के तहत बिहार सरकार ने छात्रों के लिए "मेरा मोबाइल मेरा विद्यालय" शुरू किया है।

* असम ने कक्षा 6 से 10 के लिए "विश्वा विद्या असम" मोबाइल एप्लीकेशन लॉन्च किया है।

* उत्तराखंड "संपर्क बैंक ऐप" का उपयोग कर रहा है।

* मध्य प्रदेश ने " टॉप पैरेंट ऐप " लांच किया है।

* त्रिपुरा- " एंपावर यू शिक्षा दर्पण"

* चंडीगढ़- " फिनिक्स मोबाइल एप्लीकेशन"

* वर्तमान में बच्चों के लिए "चिम्पल" ,"मैथ्स मस्ती "और "गूगल बोलो "जैसे तीन बेहतरीन एडुकेट ऐप हैं।

*शिक्षा के एक माध्यम के रूप में राज्य व्हाट्सएप का इस्तेमाल कर रहे हैं जैसे-"ओडिशा शिक्षा संजोग"

* राजस्थान- "हवामहल -खुशनुमा शनिवार"

*"मिशन प्रेरणा ई -पाठशाला " उत्तर प्रदेश

*हिमाचल - " करोना, थोड़ी मस्ती, थोड़ी पढ़ाई।"

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020"में डिजिटल शिक्षा हेतु काफी बेहतर प्रावधान किया गया है। यह न केवल **" समग्र और दूरगामी"** है बल्कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की चुनौतियों का सामना करने के लिए **"प्रभावी"**भी है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रयास:-

स्वयं पोर्टल :- यह पोर्टल भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय जिसे बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है एवं अखिल भारतीय तकनीकी परिषद द्वारा माइक्रोसॉफ्ट की मदद से तैयार किया गया एक ऑनलाइन पोर्टल है। स्वयं पोर्टल की घोषणा 1 फरवरी 2017 को भारत सरकार द्वारा आम बजट में की गई थी जिसको 9 जुलाई 2017 को तत्कालीन राष्ट्रपति माननीय प्रणब मुखर्जी ने लांच किया I स्वयं पोर्टल को शिक्षा के तीन आधारभूत सिद्धांतों की पहुंच ,निष्पक्षता व गुणवत्ता को प्राप्त करने के लिए बनाया गया है। यह विद्यार्थियों के लिए बनाया गया एक नि:शुल्क पोर्टल है जिस पर कक्षा-9 से लेकर स्नातकोत्तर तक के कोर्स उपलब्ध है, इस पर प्रमाण पत्र भी प्राप्त हो जाते हैं। स्वयं पोर्टल पर वीडियो व्याख्यान खास तौर पर तैयार की गई अध्ययन सामग्री जो डाउनलोड व मुद्रित की जा सकती है।

स्वयं प्रभा:-

यह 24 X 7 आधार पर देश में सभी जगह डी.टी.एच. के माध्यम से 32 उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक चैनल प्रदान करने की एक पहल है इसमें विविध विषयों की पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्य सामग्री होती है इसका उद्देश्य

गुणवत्ता वाले शिक्षण संस्थानों को दूर दराज के ऐसे क्षेत्रों तक पहुंचना है जहां इंटरनेट की उपलब्धता आज भी एक चुनौती है स्वयं प्रभा का प्रारंभ 9 जुलाई 2017 को किया गया जिसमें कला,विज्ञान,वाणिज्य,मानविकी सामाजिक विज्ञान के साथ-साथ इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी, कानून, चिकित्सा ,कृषि आदि आधारित पाठ्यक्रम दिखाएं जाते हैं।

राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी:-

राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी एक ऑनलाइन लाइब्रेरी है इसकी सहायता से देश का कोई भी छात्र 70 लाख से अधिक किताबों को पढ़ सकता है यह भारत की सबसे बड़ी ऑनलाइन लाइब्रेरी है।

ई.पीजी पाठशाला:-

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने परास्नातक के छात्रों के लिए ई.पीजी पाठशाला प्रारंभ किया है जिसकी सहायता से छात्र ई -बुक्स को पढ़ पाएंगे इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें बिना इंटरनेट के भी छात्र किताबों को पढ़ सकते हैं।

- यद्यपि उपर्युक्त सभी कार्यक्रम कोविड-19 के पहले ही प्रारंभ हो चुके थे, परंतु महामारी के दौरान एवं बाद में भी यह सभी पोर्टल कार्य कर रहे हैं।

ऑनलाइन सम्मेलन का अधिकाधिक आयोजन:-

महामारी के कारण सामूहिक गतिविधियों पर पाबंदी लगा दी गई थी। सम्मेलन संगोष्ठी ऑनलाइन होना प्रारंभ हो गये जिससे घर बैठे -बैठे अनेक विषय विशेषज्ञों की विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर ज्ञानवर्धक बातों से लाभान्वित होने का छात्रों को मौका मिल रहा है।

डिजिटलीकरण के साथ विश्वविद्यालयों का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयास:-

कोविड-19 युग में भारत में शैक्षिक सुधार इस बात का जीवंत उदाहरण प्रतीत होता है की आवश्यकता वास्तव में आविष्कार या पुनरआविष्कार की जननी कैसे है। शैक्षणिक संस्थाओं को ऑनलाइन शिक्षण अपनाने और आभासी अध्ययन संस्कृति को बढ़ावा देने की अनुमति देना ,ऑनलाइन शिक्षा पर स्विच करने से यह सुनिश्चित हो रहा है कि छात्रों की पढ़ाई का कोई नुकसान न हो और समय पर मूल्यांकन के साथ-साथ उनकी प्रगति पर भी नजर रखी जा रही है संभवत यह भारत के लिए शिक्षा प्रणाली के साथ प्रयोग करने और कक्षाओं को ऑनलाइन शिक्षण के साथ मिश्रित करके आभासी दुनिया में एक आदर्श बदलाव लाने वाला पहला कदम है ।प्रौद्योगिकी के साथ शिक्षा को बेहतर बनाने और ऑनलाइन व्याख्यान प्रदान करते हुए आगे बढ़ाने के लिए एक सहयोगी रणनीति बनाने से भी छात्रों को रचनात्मक रूप से सीखने में मदद मिलेगी ।नवोन्मेषी प्रौद्योगिकी का उपयोग करके पाठ्यक्रम की अवधारणा को बढ़ावा देते हुए विश्वविद्यालय छात्रों को कक्षा में केवल उनकी भौतिक उपस्थिति के आधार पर ही नहीं बल्कि पसंद से सीखने के लिए भी आकर्षित कर रहे हैं । आगे,विश्वविद्यालयों द्वारा एआई- सक्षम शिक्षा प्रदान करना,क्योंकि वे अन्य सहयोगों के साथ मिलकर विविध पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं ,केवल देश को नए कल की कल्पना करा रहा है ।दुनिया भर में लोकप्रियता हासिल

करते हुए ऑनलाइन शिक्षा परिस्थितियों के आगे घुटना टेकने के बजाय बहुत से जिज्ञासु छात्रों को पोषित कर रही है।

संकट के बीच ध्यान केंद्रित करने के अवसरों में से एक वर्चुअल इंटर्नशिप है जो छात्रों को अपने पाठ्यक्रम से परे जाने और अपने व्यवसायों की व्यवहारिकता के बारे में जानने की अनुमति दे रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में और इस प्रकार छात्रों के लिए एक और मूल्यवर्धन वह तरीका है जिससे विश्वविद्यालय उन्हें वर्तमान परिदृश्य का निरीक्षण करने और स्वचालित करने की आवश्यकता को समझने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं । इससे उन्हें निकट भविष्य में ऐसी किसी भी स्थिति के लिए तैयार होने के साथ-साथ अपने क्षेत्र को डिजिटल बनाने में भी मदद मिलेगी। यह अभ्यास अराजकता या घबराहट की तुलना में अधिक आत्मविश्वास पैदा करेगा।

अनिश्चित समय में मजबूत उपायों की आवश्यकता होती है और शिक्षा उद्योग कुछ कदम उठाने के लिए आगे बढ़ रहा है । महामारियां शैक्षणिक संस्थाओं के विकास और उन प्लेटफार्मों और तकनीक को चुनने के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में काम कर रही हैं ,जिनका उन्होंने पहले कभी उपयोग नहीं किया था। समय बदल रहा है और सिद्धांतों ने हमेशा योग्यतम के अस्तित्व की ओर इशारा किया है। एक अलग दृष्टिकोण के साथ इन संकटों से बचना और क्षेत्र का डिजिटलीकरण करना दो ऐसे तत्व हैं जो उद्योगों को तूफान से बाहर निकालेंगे और महामारी की उदासी को दूर करेंगे। डिजिटल लर्निंग एक मुख्य आधार के रूप में काम कर रही है और दुनिया भर में कई नए रुझान गति पकड़ रहें हैं । हस्तांतरणीय कौशल और अनुकूलित शिक्षण प्रदान करने वाली बहू- विषयक और मॉड्यूलर शिक्षा शास्त्र सफल होगी। महामारी के बाद के समय में पारंपरिक विश्वविद्यालयों और एड-टेक क्षेत्र को बढ़ावा मिलने के साथ ई-लर्निंग और मुख्य धारा के आमने-सामने शिक्षण का मिश्रण देखा जा सकता है।

<u>निष्कर्ष:-</u>

कोविड-19 महामारी के इस दौर में पठन-पाठन के अनुभव को देखते हुए परंपरागत शिक्षा प्रणाली को "NEP,2020 "के माध्यम से सशक्त बनाने की आवश्यकता है तथा ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा से भविष्य में शिक्षा को किफायती, समावेशी और कम लागत वाली बनाया जा सकता है सभी हितधारकों तथा सरकार को साथ मिलकर इस दिशा में सार्थक प्रयास की आवश्यकता है।

***प्रवक्ता समाजशास्त्र**
बी.एस.एन. कॉलेज बक्सावाला, सांगानेर (जयपुर)

सन्दर्भ

1. भावे, विनोबा (1972), *शिक्षण-विचार*, वाराणसी: सर्व सेवा संघ प्रकाशन
2. रॉस, जे. एस. (1972), *शिक्षण सिद्धांत के मूल-आधार*, नयी दिल्ली: एस. चन्द एंड कम्पनी।
3. रस्क, आर. आर. (1956), *द फिलोसोफिकल बेसिक ऑफ एजुकेशन*, लंदन: यूनिवर्सिटी प्रेस

4. रस्क, आर. आर. (1972), *शिक्षा के दार्शनिक आधार*, जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी

5. श्रीमाली, के. एल. (1965), *एजुकेशन इन चेंजिंग इंडिया*, नयी दिल्ली: एशिया पब्लिशिंग हॉउस

6. स्वाति जैन: भा रत में शैक्षिक शिक्षा का वि कास

7. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (2007), *धर्म और समाज*, नयी दिल्ली: रीड बुक्स

8. ठाकुर. ए. एस. एवं बेरवाल, एस, (2008). *डेवेलपमेंट ऑफ एजुकेशनल सिस्टम इन इंडिया: ए सौर्स बुक फॉर टीचर एजुकेटर्स एंड टीचर्स इन ट्रेनिंग.* नयी दिल्ली: शिप्रा पब्लिकेशन्स